

वाच्य-(voice)-क्रिया के जिस कृप के द्वारा यह बोधहो, कि वाक्य में प्रयुक्त क्रिया क्रिके अनुसार प्रयुक्त हो रही है अर्थात् वास्य में प्रयुक्त क्रिया कर्ता, क्रम या भाव किसके अनुसार ग्रायुक्त हो रही है, इसका बोध कराने वासे शब्द वाच्य कहलाते हैं-जैसे- युजय पत्र लिखता है। यमा पत्र लिखती है। अक्रियाय



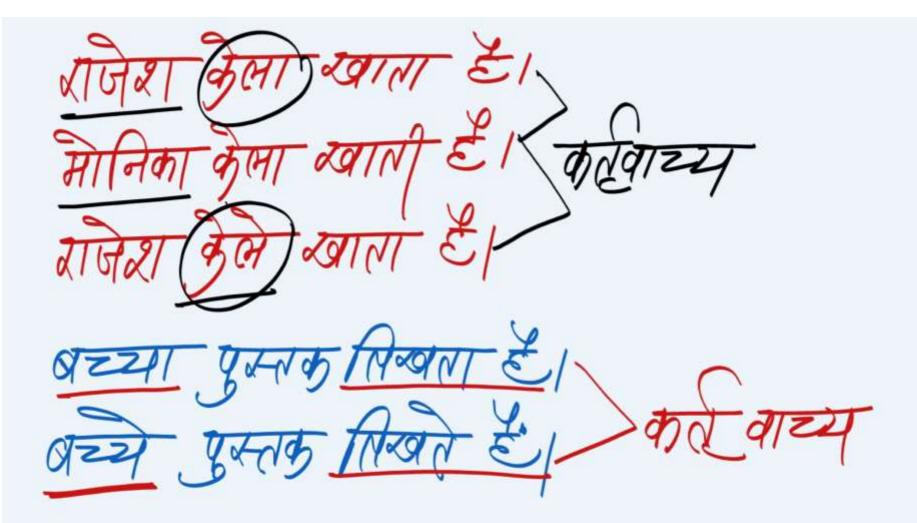
वाच्य के भेद - 'तीन भेद' (श) > कर्मवाच्य 3) भाष वाच्य



1) of arzy-(Active Voice)

अब किसी वाक्य में प्रयुक्त क्रिया कृति के अनुसार प्रयुक्त हो मर्थात् जब किसी वाक्य में र्गि की प्रधानमा हो, मो उसे कर्त्वाच्य महते हैं-







विश्राय — यदि किसी वाक्य में कुर्ता के साथ 'में प्रसर्ग ज़ुड़ा हो और त्रियां लिर्यक स्थिति में नहीं हो, तो वाम्य में प्रयुक्त क्रिया भते ही कर्म के अनुसार चर्यों न वदले फिर भी करिवाच्य ही होता है। अजय कि केला खाया। बाधा कि केला खाया।



वाच्य



किसान (ने) खेर जोता | किसान किया जीत रहा है।-अपूर्ण वरिष किसानी खेर जीत्र रहा होगा | - सेदियुक्त शायद किसान में अवल जोत रहा हो- संभाव्यवर्ति



विनोद्भी अयपुर जारग्गा |- सामा भावि शायद विनोद निजयपुर जास् । - सुभाव्य भिक् यदि विनोदिन जयपुर जार्ग्गा में भी जाइँगा। टल्हतुगड भाविक